वर्णनानिपुण बाणभट्ट- विवाहप्रस्तुतिवर्णन

डॉ. बलजीत सिंह यादव

प्रवक्ता संस्कृत विभाग

स्नातकोत्तर महाविद्यालय महेन्दगढ़

हरियाणा

महाकवि बाणभट्ट की गद्य रचना अतीव महत्वशालिनी है,संस्कृत गद्यसाहित्यकारों में बाण का स्थान प्रथम है,
हर्षचरित बाण की प्रथम रचना है, इसमें बाण की महती साधना परिलक्षित होती है, ऐतिहासिक काव्य रूप में हर्षचरित संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक मूल्यवान ग्रन्थ है, इस काव्य का सांस्कृतिक रूप भी आती रोचक है, यहाँ चतुर्थ उच्छ्वास में राजश्री के विवाह की तैयारियों का वर्णन अत्यंत मनोहर है इसका प्रतिपादन खूब रोचक प्रतीत
होता है, तथा :

जातमुदि कृतार्थे गते च तस्मिन्नासन्नेषु च विवाह दिवसेषू
द्दामदीयमानताम्बूलपटवासकुसुमप्रसाधितसर्वलोकम् ।
सकलदेशादिश्यमानशिल्पिसार्थागमनम्, अवनिपाल
पुरुषगृहीतसमग्रग्रामीणानीयमानोपकरण सम्भारम् -

विवाह के दिन भी निकट आए, सजे धजे सब लोगों को पान के बीड़े, कपड़े की सुगन्धि और फूल बाँटे जाने लगे, दूसरे देशों से कारीगर बुलेट पर आने लगे, राजा के नियुक्त सैनिक गाँव वालों को पकड़-पकड़ कर उनसे सब सामग्री उठवाकर लाने लगे.

राजदौवारिकोपनीयमानानेकनृपोपायनम्,
उपनिमन्त्रितागतबन्धुवर्गसंवर्गणव्यग्र राजवल्लभम् लब्धमधुमदप्रचण्डचर्मकारकरपुटोल्लालितकोणपटुविघटन
रणन्मङ्गलपटहम-

राजा के दौवारिक अनेक राजाओं के दिए हुए तरह-तरह के उपहारों को लाने लगे.निमंत्रण होकर आए हुए रिश्तेदारों को आदरपूर्वक राजा के प्रिय लोग ठहराने के काम में व्यस्त थे, शराब के नशे में धुत्त होकर ढोल बजाने वाला चमार डंका लिए धमाधम ढोल पीट रहा था.

पिष्टपञ्चाङ्गुलमण्ड्यमानोलूखलमुसलशिलाद्युपकरणम्
ओखली,मूसर और सिल आदि पत्थर की सामग्री जुटाकर
उन पर ऐपन के थापे दिए जाने लगे, अशेषाशामुखाविर्भूत
चारणपरम्परापूर्यमाणप्रकोष्ठप्रतिष्ठाप्यमानेन्द्राणीदैवतम्.

अनेक दिशाओं से दूर-दूर से आए हुए चारण लोग जिस कोठरी में जमा थे उसमें इन्द्राणी को मूर्ति के रूप में दई
देवता पधराए गए थे.

सितकुसुमविलेपनवसनसत्कृतैःसूत्रधारैरादीयमानविवाह
वेदीसूत्रपातम्,उत्कूर्चककरैश्च सुधाकर्पूरस्कन्धैरधिरोहिणी
समारुदैर्धवैर्धवलोक्रियमाणप्रासादप्रतोलीप्राकार शिखरम, -

सफेद फूल,चंदन और वस्त्र से आदर पाए हुए सूत्रधार (मिस्त्री लोग) विवाह की वेदी बनाने में सूत से नाप-तौल
करने लगे, पोतने वाले मजदूर हाथ में कूँची उठाए, कंधों से चूने की हंडी लटकाए,सीढ़ी पर चढ़कर राजमहल, पौरी,चहार दिवारी और शिखरों पर सफेदी कर रहे थे.

क्षुण्णक्षाल्यमानकु सुम्भसंभाराम्भ:प्लवपूररज्यमान
जनपादपल्लवम्, निरुप्यमाणयौतकयोग्यमातङ्गतुरङ्गतरङ्गि
ताङ्गनम्,गणनाभियुक्तगणकगण गृह्यमाणलग्नगुणम्,
गन्धोदकवाहिमकरमुखप्रणालीपूर्यमाणक्रीडावापीसमूहम्,
हेमकारचक्रप्रक्रान्तहाटकघटनटाङ्कारवाचालितालिन्दकम्

पीसे जाते हुए कुंकुम के धोने से बहते हुए जल में आने जाने वाले के पैर रंग रहे थे, दहेज में देने योग्य हाथी,घोड़े आँगन में भरे हुए थे, उन्हें जांचा जा रहा था,गणना में लगे हुए ज्योतिषी लोग सुन्दर लग्न शोध रहे थे,मगर के मुँह की नाली से गंध जल बह कर क्रीड़ा की बौलियों में भर रहा था. राजद्वार की ड्योढ़ी के बाहर सोना गढ़ने में जुटे हुए सोनारों की ठक-ठक भर रही थी.

उत्थापिताभिनवभित्तिपात्यमानबहल
बालुकाकण्ठकालेपाकुलालेपकलोकम्, चतुरचित्रकर
चक्रवाललिख्यमानमाङ्गल्याले ख्यम्, ले प्यकार
कदम्बकक्रियमाणमृन्मयमीनकूर्ममकरनारिकेलकदली
पूगवृक्षकम्, क्षितिपालैश्च स्वयमावद्ध कक्ष्यैः
स्वाम्यर्पितकर्मशोभासंपादनाकुलैः सिन्दूरकुट्टिमभूमीश्च
मसृणयद्भिर्विनिहितसरसातर्पणहस्तान्विन्यस्तालक्त
कपाटलांश्च चूताशोकपल्लवलाञ्छितशिखरानुद्वाह

वितर्दिकास्तम्भानुत्तम्भयद्भिः प्रारब्ध विविध व्यापार -

नई उठाई जाती हुई दीवारों से गिरते हुए बहुत बालू के कणों से प्लास्टर करने वाले व्याकुल हो गए, चित्रकारी में प्रवीण पत्रकार लोग मांगलिक चित्र बना रहे थे,खिलौने बनाने वाले कुम्हार मछली,कछुआ, मगर,नारियल,केला,सुपारी के वृक्ष बना रहे थे,कच्छा बाँधकर स्वयं राजा लोग मालिक के द्वारा मिले हुए कामों में आकुल थे, जैसे कुछ सिंदूरी रंग के फर्श को माँजकर चमका रहे थे, कुछ व्याह की वेदी के खम्भों को अपने हाथ से खड़ा कर रहे थे, उन खम्भों को गीले ऐपन के थापों, आलता के रङ्ग में रंगे लाल कपड़ों और आम एवं अशोक के पल्लवों से सजाया था, इस प्रकार वे अनेक कामों में लग गए थे.

आसूर्योदयाच्च प्रविष्टाभि: सतीभः सुभ
सुवेशाभिरविधवाभिः सिन्दूररजोराजिराजितललाटाभि
वधूवरगोत्रग्रहणगर्भाणि श्रुतिसुभगानि मङ्गलानि गायन्तीभि
बहुविधवर्णकादिग्धाङ्गलीभिर्गीवासूत्राणि च ।
चित्रयन्तीभि चित्रलतालेण्यकुशलाभिः कलशांश्च ।
धवलिताशीतलशाराजिर श्रेणीश्च मण्डयन्तीभिरभिन्नपुट :
कसितूलपाल्यांश्च वैवाहिककङ्कणोर्णासूत्रसंनाहांश्च रञ्जयन्ती
भिर्बलाशनापतघनीकृतकुङ्कु मंक ल्क मिश्रितां श्चा
ङ्गरागांल्लावण्यविशेषकृन्ति च मुखालेपनानि कल्पयन्तीभिः ।
कक्कोलमिश्राः सजातीफलाः स्फुरत्स्फीत्स्फाटिककर्पूर :
शकलखचितान्तराला लवङ्गमाला रचयन्तीभिः समन्तात् ।
सामन्तसीमन्तिनीभिव्यासम्.

सामन्तों की सती रूंपवती स्त्रियाँ सुहावने वेश पहने और माथे पर सिन्दूर लगाए, सूर्योदय से ही लेकर पहुँच गई ।
थीं, कुछ वर-वधू के नाम ले-लेकर मङ्गलाचार के कानों ।के सुखद गीत गा रही थीं, कुछ तरह-तरह के रङ्गों में :
उंगलियाँ बोर कर कण्ठियों के डोरों को रंग रही थीं, चित्र विचित्र फूल-पत्तियों के काम करने में चतुर कुछ स्त्रियाँ ।
सफेदी किए हुए कलशों पर और कच्ची सरइयों पर चित्र लिख रही थीं, कुछ कपास के छोटे-छोटे गुल्ले और ब्याह ।
के कंगनों के लिए ऊनी और सूती लच्छियाँ रँग रही थीं,कुछ बलाशना नामक औषधि घी कुङ्कम मिलाकर उबटन :
एवं सुन्दरता बढ़ाने वाले मुखालेपन तैयार कर रही थीं,कुछ कफोल-जायफल और लौंग की मालायें बीच-बीच ।में स्फटिक जैसे श्वेत कपूर की चमकदार बड़ी डलियाँ पिरोकर बना रही थीं.

बहुविधभवितनिर्माणनिपुणपुराणपौरपुरन्धिबध्यमाने
बद्ध याचारचतुरान्तः पुरजर तीजनित ।
पूजाराजमानरजकरज्यमानै रक्तैश्चोभयपटान्तलग्न
परिजनप्रेडोलितैश्छायासु शोष्यमाणैःशुष्कैश्च कुटिलक्रमरूप
क्रियमाणपल्लवपरभागैरपरैरारब्धकुङ्कमपङ्कस्थासकच्छुरणैर
परैरुद्भुजभुजिष्यभज्यमानभङ्गरोत्तरीयैः क्षौमैश्चबादरैश्च
दुकूलैश्च लालातन्तुजैश्चांशुकैश्च नेत्रैश्च निर्मोकनिभैरक

: ठोररम्भागर्भकोमलैनि:श्वासहायैः स्पर्शानुमेयैर्वासोभिः
सर्वतः स्फुरद्भिरिन्द्रायुधसहरिवसंछादितम् ।

बहुत प्रकार की भक्तियों के निर्माण में निपुण नगर की वृद्ध स्त्रियाँ या पुरखिने (बांधनू की रंगाई के लिए)कपड़े को बाँध रही थीं, कुछ कपड़े बाँधे जा चुके थे, आचार में चतुर अन्त:पुर की बूढ़ियों से पूजा प्राप्त कर शोभा प्राप्त करते हुए रजक कपड़े रँग रहे थे एवं कुछ कपड़े रँगे जा रहे थे, दोनों सिरों पर पकड़कर परिजन लोग झकझोर कर छाया में सुखा रहे थे और कुछ सूख गए थे, कुछ कपड़ों पर टेढ़े क्रम से पल्लव के सुन्दर चिह्न बनाये जा रहे थे,कुछ पर गीले कुङ्कमों की थापियों का काम आरम्भ था, कुछ सिमटे हुए उत्तरीयों को नौकर ऊपर हाथ उठाकर झाड़ रहे थे, क्षौम, बादर (कपास के बने कपड़े),दुकूल,लालातन्तुज (रेशमी) अंशुक और नेत्र आदि कई प्रकार के वस्त्र थे, जो सांप की केंचुली के समान हल्के केले के खम्भे की भीतरी पात के समान कोमल, सॉस की हवा से भी उड़ जाने वाले एवं केवल छूकर ही अनुमान करने योग्य थे, मानों हजारों इन्द्रायुध के समान वस्त्रों से राजकोट ढंक रहा था.

उज्ज्वलनिचोलकावगुण्ठ्यमानहंसकु लैश्च शयनीय
स्तारामुक्ताफलोपचीयमानै श्च कशुकैरने कोपायोग
पाट्यमानैश्चापरिमितैः पट्टपटी सहस्रैरभिनवरागकोमलदुकू
लराजमानैश्च पटवितानैः स्तवरकनिवहनिरन्तरच्छाद्यमान.
समस्तपटलैश्च मण्डपैरुच्चित्रनेत्रपटवेष्ट्यमानैश्च स्तम्भ
रुज्ज्वलं रमणीयं चौत्सुक्यप्रदं च मङ्गल्यं चासीद्राजकुलम्, -

पलंगों के बने हुए हंसों को सफेद पहनावे पहनाए गए थे, कञ्चन पर मोतियों की कढ़ाई की गई थी,अनेक उपयोगके लिए हजारों प्रकार के छोटे-छोटे पट्टे फाड़े जा रहे थे,

प्राणालोकमनोज्ञदर्शनदिशा राष्ट्रीय सम्मेलन
रम्यं राजति बाणभट्टसुकवेर्यत्सप्तमं शोभनम्,
विज्ञश्रीशुकदेवशर्म विदुषामाध्यक्ष्ययोगादिह
प्राज्ञानां कविपुण्यजन्मदिवसेभूयात्सतां मङ्गलम्.

नये रंगे कोमल दुकूलों से पट वितान शोभ रहे थे,

स्तवन नाम के वस्त्रों से मंडप खूब ढके जा रहे थे,चित्रों वाले नेत्र वस्त्रों से स्तम्भ लपेटे जा रहे थे, इस प्रकार राजकोट उज्ज्वल रमणीय,औत्सुक्य प्रदा और मांगलिक हो गया था.